SATYA MicroCapital Ltd.

सर्वे भवन्तु सुखिनः

July - September, 2023
Vol 04, Issue 04

Inside SATYA

YOUR QUARTERLY INFOTAINMENT MAGAZINE

SATYA

सर्वे भवन्तु सुखिनः

Great Place To Work. Certified SEPT 2022 - SEPT 2023 INDIA

Best Workplaces™ in BFSI

Great Place To Work. INDIA 2023

MISSION

"To be a preferred choice for the people at bottom of pyramid in creation of their enterprise & livelihood through holistic approach"

"सीमित सुविधा प्राप्त लोगों की आजीविका एवं उद्यम-विकास हेतु, बृहद दृष्टिकोण के साथ, एक प्राथमिक विकल्प होना"

VISION

"To be a catalyst for the socio-economic upliftment of 5 million households by the year 2025"

"वर्ष 2025 तक 50 लाख परिवारों के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के लिए एक उत्प्रेरक होना"

MOTTO

"सर्वे भवन्तु सुखिनः"

"May all be Prosperous and Happy"

SATYA
सर्वे भवन्तु सुखिनः

विषय सूची

- MD की कलम से ---- 04
- SATYA & Industry Snapshot ---- 05
- Workplace ---- 06
- अमर बलिदानी वीरांगना अवंतीबाई लोधी ---- 07-08
- अमर बलिदानी भाई बालमुकुन्द ---- 09-10
- अमर बलिदानी मदनलाल ढींगरा ---- 11-14
- अमर बलिदानी वीरांगना उदा बाई ---- 15
- Unbelievable Facts! ---- 16-17
- Funkaar ---- 18
- Motivational column by Sandeep Kumar ---- 19
- SAFAL Sutra ---- 20-21
- क्लाइंट स्टोरी ---- 22
- पंचतंत्र की कहानियाँ ---- 23
- Best Workplace in BFSI ---- 24-25
- किस्सागोई ---- 26-28
- ग्राहक सुरक्षा सिद्धान्त ---- 29
- सत्या संदेश ---- 30
- मानसून टिप्स ---- 31
- EGRM ---- 32
- रेसिपी ---- 33
- Life @ Satya ---- 34

MD की कलम से

नमस्कार साथियों,

एक बार फिर इनसाइड सत्या पत्रिका के माध्यम से आपके समक्ष अपने मन की बात रखना चाहता हूँ। आप सभी प्रियजनों को भारत के ७६वें स्वतंत्रता दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। हर साल हम सब भारतीय ये दिन बड़े ही गर्व के साथ मनाते हैं। परन्तु इस आज़ादी को पाने के लिए जिन अमर शहीदों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया, सबसे पहले उनकी शहादत को स्मरण करते हैं और उन्हें शत-शत नमन करते हैं। हमें यह आज़ादी एक कठिन राह से गुजरकर और बहुत सी कुर्बानियां देकर हासिल हुई है। इस आजादी की कीमत हमने शहीदों के खून और सैंकड़ों देशवासियों के बलिदान से चुकाई है।

मुझे गर्व है कि हम सभी एक बड़े परिवार के रूप में मिलकर काम कर रहे हैं, जो सामूहिक रूप से प्रगति की ओर बढ़ रहा है। आपकी सफलता और सामर्थ्यता की बदौलत हमने पिछले वर्ष २०२२-२३ में 'प्रयास व्यापार ऋण' जैसे महत्वपूर्ण प्रोडक्ट्स की शुरुआत की है, जिन्हें हम माईक्रोफाइनेंस के परिपक्व ग्राहकों के लिए प्रदान कर रहे हैं। सत्या ने हाल ही में ५००० करोड़ रूपये का AUM हासिल किया है। इस महत्वपूर्ण कीर्तिमान के साथ ही हम गर्वान्वित हैं कि हमने १५ लाख से अधिक ग्राहकों को वित्तीय सहायता प्रदान कर सत्या परिवार में जोड़ा है। इस सफलता के पीछे हमारी टीम की कठिन मेहनत, संघर्ष और विश्वास की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हर एक सफलता, एक नई शुरुआत की ओर कदम आगे बढ़ाने का मौका है। यह निश्चित रूप से हमारे ग्राहकों एवं कर्मचारियों के विश्वास और समर्थन का परिणाम है, जिन्होंने हमें इस सफलता की ऊँचाइयों तक पहुंचाया है और हमारे सपनों को हकीकत में बदलने में मदद की है।

इसके अलावा, हाल ही में हमारी कंपनी SATYA को 'बेस्ट प्लेस टू वर्क' और 'टॉप ५० इंडिया बेस्ट वर्कप्लेस इन बीएफएसआई' में ग्रेट प्लेस टू वर्क इंस्टीट्यूशन्स के द्वारा पहचाना गया है। यह एक महत्वपूर्ण सम्मान है, जो कि हमारे एम्प्लाइज की मेहनत और समर्पण का परिणाम है। हम इस उपलब्धि पर गर्वित हैं और मैं हमारे समृद्ध संगठन के सभी सदस्यों का आभारी हूं, जिन्होंने इस संगठन को सर्वश्रेष्ठ कार्यस्थल बनाने में मदद की है।

हमारा प्रधान ध्येय है कि हम अपनी ग्राहक सेवाओं को मजबूती दें और हमारे ग्राहकों को और अधिक प्रशिक्षण प्रदान करें। हाल ही में, रिजर्व बैंक ने हमारे माईक्रोफाइनेंस ग्राहकों के लिए कुछ कार्यशालाओं का आयोजन किया है, जिससे हमारे ग्राहकों को काफी लाभ हुआ। हमारा ट्रेनिंग डिपार्टमेंट भी अपनी कार्यशालाओं के माध्यम से हमारे ग्राहकों को डिजिटल बैंकिंग और उनके लिए उपलब्ध वित्तीय विकल्पों के बारे में शिक्षित करता है।

माईक्रोफाइनेंस कंपनियाँ एक परिवर्तन दौर से गुज़र रहीं हैं,हमें बड़े बैंकों और दूसरे बड़े व्यवसायों के साथ मजबूती से खड़े रहना है। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म जैसे की ई-केवाईसी, ई-साइन, QR कोड का लाभ उठाकर हमने ग्राहक सेवाओं,वित्तीय सेवाओं को अधिक सुलभ और सुविधाजनक बनाया है। सत्या ने डिजिटलीकरण के जिस दृष्टिकोण को गति दी है, उसने हमारे ग्राहकों को ग्राहक सेवा, अनुभव और संतुष्टि का एक उन्नत स्तर प्रदान किया है।

टेक्नोलॉजी हमारे परिचालन का सर्वोत्कृष्ट हिस्सा बन गई है। हमें पेपरलेस और कैशलेस ऑपरेशन्स को एक नए स्तर पर ले जाना होगा। हमें नए मानक बनाने के लिए तैयार होना होगा और १०,००० करोड़ रूपये का AUM की प्राप्ति के लिए सत्या माइक्रोकैपिटल को तैयार करना होगा।

हमारा अगला लक्ष्य अपने आगामी स्थापना दिवस पर २० लाख ग्राहकों को वित्तीय सुविधा प्रदान कर सत्या परिवार से जोड़ना है। इस लक्ष्य के लिए,हम सभी को एकजुट होकर काम करना होगा। मुझे पूर्ण यकीन है कि यह लक्ष्य हम अवश्य हासिल करेंगे, क्योंकि मेरे पास दुनिया की सबसे कर्मठ और अद्भुत टीम है,जिसके लिए कोई भी लक्ष्य नामुमकिन नहीं है।

ढेरों शुभकामनाओं सहित,

विवेक तिवारी

SATYA Snapshot

Parameters	Data as on 30th September 2023
Number of States	25
Number of Districts	312
Number of Branches	523 (excluding HO)
Number of Villages	49,704
Number of Centers	1,58,680
No. of Clients	15,24,961 (excluding sale of portfolio to ARC)
Number of Active Loans	15,25,016 (excluding sale of portfolio to ARC)
Loan Outstanding	Rs 4,836.29 Cr (excluding sale of portfolio to ARC)
Total no. of Staff	6,641

Industry Snapshot

Indicator	Q1 FY 22-23	Q4 FY 22-23	Q1 FY 23-24	YoY change (%) Q1 FY 23-24 over Q1 FY 22-23
	30-Jun-22	31-Mar-23	30-Jun-23	
Branches	15,202	16,847	17,706	16.5%
Employees	1,31,496	1,47,993	1,56,093	18.7%
Clients (Cr.)	3.1	3.6	3.8	21.1%
Loan accounts	3.5	4.2	4.6	31.7%
Gross Loan Portfolio (Rs Cr)	89,005	1,21,326	1,26,053	41.6%
Balance sheet Portfolio (Rs Cr)	76,697	99,969	1,03,942	35.5%
Loans disbursed (during the year, Cr)	51.2	95.3	68.9	34.7%
Loan amount disbursed (during the quarter, Rs Cr)	20,845	41,490	30,398	45.8%

Workplace

वर्कप्लेस फेसबुक द्वारा विकसित एक एंटरप्राइज कनेक्टिविटी प्लेटफॉर्म है जो ग्रुप, इंस्टेंट मैसेजिंग और न्यूज फीड जैसे टूल्स की मदद से एक संस्था के सभी कर्मचारियों को एक साथ जोड़े रखता है।

सत्या ने यह प्लैटफ़ार्म अपने कर्मचारियों को एक साथ जोड़े रखने के लिए ही लिया है। इसलिए आप सभी कर्मचारियों से विनती है कि वर्कप्लेस पर अकाउंट बनाकर, जानकारियाँ एक दूसरे के साथ साझा करने हेतु इसका अधिक से अधिक इस्तेमाल करें।

लॉगिन करने की प्रक्रिया:

जैसे ही कोई कर्मचारी कंपनी के साथ जुड़ता है, कंपनी द्वारा उसका एम्प्लोयी कोड़ जेनरेट किया जाता है एवं उसे कंपनी एक CUG नंबर भी प्रदान करती है। नए कर्मचारी को अपना वर्कप्लेस अकाउंट एक्टिवेट करवाने हेतु, अपना CUG नंबर अपने एम्प्लोयी कोड के साथ स्टेट आईटी को भेजना होता है। स्टेट आईटी द्वारा हैड ऑफिस आईटी विभाग को यह अनुरोध भेजा जाता है जहां से एक एक्सैस कोड़ जेनरेट किया जाता है और वापस से स्टेट आईटी को भेजा जाता है जिसकी मदद से कर्मचारी पहली बार वर्कप्लेस पर लॉगिन कर अपना पासवर्ड सेट कर सकता है और मेम्बर बन सकता है। इसके पश्चांत वह किसी भी लैपटाप या मोबाइल एप के जरिये पासवर्ड का प्रयोग कर अपना वर्कप्लेस अकाउंट एक्सैस कर सकता है।

अमर बलिदानी वीरांगना अवंतीबाई लोधी

वर्ष 1857 में हुए भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में भारत के वीरों और वीरांगनाओं ने देश के लिए अपना सर्वस्व न्योच्छावर कर दिया था। ऐसे वीरों-वीरांगनाओं की रोमांचक गौरव-गाथाओं को कभी भुलाया नहीं जा सकता। इन्होंने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर देश के आजाद होने तक भिन्न- भिन्न रूप में अपना अहम योगदान दिया, लेकिन भारतीय इतिहासकारों ने हमेशा से उन्हें नजरअंदाज किया है। देश में सरकारों या प्रमुख सामाजिक संगठनों द्वारा स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े हुए लोगों के जो कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं वो सिर्फ और सिर्फ कुछ प्रमुख स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के होते हैं, लेकिन बहुत से ऐसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हैं जिनके अहम योगदान को न तो सरकारें याद करती हैं न ही समाज याद करता है। लेकिन उनका योगदान भी देश के अग्रणी श्रेणी में गिने जाने वाले स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से कम नहीं है।

ऐसी ही 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की एक वीरांगना हैं रानी अवंतीबाई लोधी, जिनके योगदान को हमेशा से इतिहासकारों ने कोई अहम स्थान न देकर नाइंसाफी की है। आज देश में बहुत से लोग हैं जो इनके बारे में जानते भी नहीं है। लेकिन इनका योगदान भी 1857 के स्वाधीनता संग्राम की अग्रणी नेता वीरांगना झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से कम नहीं है, लेकिन इतिहासकारों की पिछड़ा और दलित विरोधी मानसिकता ने हमेशा से इनके बलिदान और 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को नजरअंदाज किया है। वीरांगना अवंतीबाई लोधी आज भी लोक काव्यों की नायिका के रूप में हमें राष्ट्र के निर्माण, शौर्य, बलिदान व देशभक्ति की प्रेरणा प्रदान कर रही हैं। हमारे देश की सरकारों ने चाहे केंद्र की जितनी सरकारे रही हैं या राज्यों की जितनी सरकारें रही हैं उनके द्वारा हमेशा से वीरांगना अवंतीबाई लोधी की उपेक्षा होती रही है।

वीरांगना महारानी अवंतीबाई लोधी का जन्म पिछड़े वर्ग के लोधी राजपूत समुदाय में 16 अगस्त 1831 को ग्राम मनकेहणी, जिला सिवनी के जमींदार राव जुझार सिंह के यहां हुआ था। वीरांगना अवंतीबाई लोधी की शिक्षा दीक्षा मनकेहणी ग्राम में ही हुई। अपने बचपन में ही इस कन्या ने तलवारबाजी और घुड़सवारी करना सीख लिया था। लोग इस बाल कन्या की तलवारबाजी और घुड़सवारी को देखकर आश्चर्यचकित होते थे। वीरांगना अवंतीबाई बाल्यकाल से ही बड़ी वीर और साहसी थीं। जैसे-जैसे वीरांगना अवंतीबाई बड़ी होती गयीं वैसे-वैसे उनकी वीरता के किस्से आसपास के क्षेत्र में फैलने लगे।

पिता जुझार सिंह ने अपनी कन्या अवंतीबाई लोधी का सजातीय लोधी राजपूतों की रामगढ़ रियासत, जिला मण्डला के राजकुमार से करने का निश्चय किया। जुझार सिंह की इस साहसी बेटी का रिश्ता रामगढ़ के राजा लक्ष्मण सिंह ने अपने पुत्र राजकुमार विक्रमादित्य सिंह के लिए स्वीकार कर लिया। इसके बाद जुझार सिंह की ये साहसी कन्या रामगढ़ रियासत की कुलवधु बनी। सन् 1850 में रामगढ़ रियासत के राजा और वीरांगना अवंतीबाई लोधी के ससुर लक्ष्मण सिंह की मृत्यु हो गई और राजकुमार विक्रमादित्य सिंह का रामगढ़ रियासत के राजा के रूप में राजतिलक किया गया, लेकिन कुछ सालों बाद राजा विक्रमादित्य सिंह अस्वस्थ्य रहने लगे। उनके दोनों पुत्र अमान सिंह और शेर सिंह अभी छोटे थे, अतः राज्य का सारा भार रानी अवंतीबाई लोधी के कन्धों पर आ गया। वीरांगना अवंतीबाई लोधी ने वीरांगना झाँसी की रानी की तरह ही अपने पति विक्रमादित्य के अस्वस्थ होने पर ऐसी दशा में राज्य कार्य संभाल कर अपनी सुयोग्यता का परिचय दिया और अंग्रेजों की चूलें हिला कर रख दीं।

इस समय लॉर्ड डलहौजी भारत में ब्रिटिश राज का गवर्नर जनरल था, लॉर्ड डलहौजी का प्रशासन चलाने का तरीका साम्राज्यवाद से प्रेरित था। उसके काल मे राज्य विस्तार का काम अपने चरम पर था। भारत में लॉर्ड डलहौजी की साम्राज्यवादी नीतियों और उसकी राज्य हड़प नीति की वजह से देश की रियासतों में हल्ला मचा हुआ था। लॉर्ड डलहौजी की राज्य हड़प नीति के अन्तर्गत जिस रियासत का कोई स्वाभाविक बालिग उत्तराधिकारी नहीं होता था, ब्रिटिश सरकार उसे अपने अधीन कर रियासत को ब्रिटिश साम्राज्य में उसका विलय कर लेती थी। इसके अलावा इस हड़प नीति के अंतर्गत डलहौजी ने यह निर्णय लिया कि जिन भारतीय शासकों ने कंपनी के साथ मित्रता की है अथवा जिन शासकों के

राज्य ब्रिटिश सरकार के अधीन है और उन शासकों के यदि कोई पुत्र नहीं है तो वह बिना अंग्रेजी हुकूमत कि आज्ञा के किसी को गोद नहीं ले सकता। अपनी राज्य हड़प नीति के तहत डलहौजी कानपुर, झांसी, नागपुर, सतारा, जैतपुर, सम्बलपुर, उदयपुर, करौली इत्यादि रियासतों को हड़प चुका था।

रामगढ़ की इस राजनैतिक स्थिति का पता जब अंग्रेजी सरकार को लगा तो उन्होंने रामगढ़ रियासत को 'कोर्ट ऑफ वार्डस' के अधीन कर लिया और शासन प्रबन्ध के लिए एक तहसीलदार को नियुक्त कर दिया। रामगढ़ के राज परिवार को पेन्शन दे दी गई। इस घटना से रानी वीरांगना अवंतीबाई लोधी काफी दुखी हुईं, परन्तु वह अपमान का घूंट पीकर रह गईं। रानी उचित अवसर की तलाश करने लगी। मई 1857 में अस्वस्थता के कारण राजा विक्रमादित्य सिंह का स्वर्गवास हो गया। सन 1857 में जब देश में स्वतंत्रता संग्राम छिड़ा तो क्रान्तिकारियों का सन्देश रामगढ़ भी पहुंचा। रानी तो अंग्रेजों से पहले से ही जली भुनी बैठी थीं, क्योंकि उनका राज्य भी झांसी और अन्य राज्यों की तरह कोर्ट कर लिया गया था और अंग्रेज रेजिमेंट उनके समस्त कार्यों पर निगाह रखे हुई थी। रानी ने अपनी ओर से क्रान्ति का सन्देश देने के लिए अपने आसपास के सभी राजाओं और प्रमुख जमींदारों को चिट्ठी के साथ कांच की चूड़ियां भिजवाईं, उस चिट्ठी में लिखा था- ''देश की रक्षा करने के लिए या तो कमर कसो या चूड़ी पहनकर घर में बैठो तुम्हें धर्म ईमान की सौगंध जो इस कागज का सही पता बैरी को दो।''

सभी देश भक्त राजाओं और जमींदारों ने रानी के साहस और शौर्य की बड़ी सराहना की और उनकी योजनानुसार अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह

अमर बलिदानी भाई बालमुकुन्द

स्वतंत्रता संग्राम के जांबाज सेनानियों की अमर गाथाओं में से कुछ गायी गयीं और समय के गर्त में समा चुकी कुछ गाथाओं को भुला दी गयीं. ऐसी ही एक गुमनाम गाथा है जो वीर बलिदानी भाई बालमुकुन्द के जांबाजी की गाथा गाती हुयी सामने नजर आती है.

इस गाथा की पृष्ठभूमि दिल्ली से जुड़ी हुयी है और इस गाथा से जुड़ा है "दिल्ली-लाहौर षड्यंत्र" का नाम. वर्ष 1912 में भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड हार्डिंग की हत्या के लिए इस षड्यंत्र को रचा गया था. इस षड्यंत्र को रासबिहारी बोस ने रचा था लॉर्ड हार्डिंग के खात्मे के लिए.

ब्रिटिश सरकार की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित होने के मौके पर लॉर्ड हार्डिंग दिल्ली आये हुए थे. लॉर्ड हार्डिंग पर 23 दिसंबर 1912 को चाँदनी चौक में एक जुलुस के दौरान बम फेंका गया, जिसमें वो बुरी तरह घायल हो गए थे लेकिन काल-कवलित होने से बाल-बाल बच गए थे. हमला इतना सटीक था की लॉर्ड के महावत की इस काण्ड में मौत हो गयी थी.बस मौत से कुछ ही फासले पर बैठे,बच गए थे लॉर्ड हार्डिंग. इस अपराध को अंजाम देने वाले क्रांतिकारी भाई बालमुकुंद के साथ क्रांतिकारी बसंत कुमार विश्वास,अवध बिहारी और मास्टर आमिर चंद गिरफ्तार हो गए थे.

भाई बालमुकुंद, मास्टर अमीरचंद और मास्टर अवध बिहारी को 8 मई, 1915 को फांसी पर लटका दिया गया. इन सभी पर 1912 में लार्ड हार्डिग पर बम फेंकने का आरोप था। जिस स्थान पर इन्हें फांसी दी गई, वहां अब शहीद स्मारक है। यह शहीद स्मारक दिल्ली गेट स्थित मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज में स्थित है।

इन अमर क्रांतिवीरों में भाई बालमुकुंद की कहानी बेहद रोमांचकारी है। वह स्वयं तो वीर थे ही, उनकी पत्नी रामरखी भी आदर्श वीरांगना थीं। पति के गिरफ्तार होने के दिन से ही रामरखी को आभास-सा हो गया था कि अब सबकुछ समाप्त होने को है। उन्हें पति से मिलने की इजाजत भी बहुत मुश्किल से मिली।

जेल में मुलाकात के दौरान उनकी पत्नी ने पूछा-'' जेल में खाना कैसा मिलता है ?'' इस पर भाई बालमुकुंद ने हंसकर कहा- ''मिट्टी मिली रोटी''. इसके बाद रामरखी अपने घर वापस आकर अपने आटे में भी मिट्टी मिलाकर रोटी खाने लगीं.

दोबारा जब वे पति से मिलने जेल पहुंचीं तो पूछा-''सोते कहां हैं ?''. बालमुकुंद हँसते हुए बोले-''अंधेरी कोठरी में दो कंबलों पर''. बस उस दिन से रामरखी भीषण गर्मी में भी जमीन पर कंबल बिछाकर सोने लगीं. जिस उनके पति यानी भाई बालमुकुंद को फांसी हुई, उस दिन रामरखी को कुछ अनहोनी का अंदेशा हो गया था.कहते हैं कि वो सवेरे उठकर नये वस्त्र-आभूषण पहनकर एक चबूतरे पर बैठ गईं. उनके चेहरे पर दु:ख के भाव ही नहीं थे. लेकिन वे बैठीं तो उठी ही नहीं. पति-पत्नी की चिता एक साथ जलाई गई.

अमर बलिदानी मदनलाल ढींगरा

आजादी की लड़ाई में ऐसे भी कई सिपाही थे जिन्होंने देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए पर वह आजाद भारत में वह स्थान प्राप्त नहीं कर पाए जो बाकी क्रांतिकारियों को हासिल हुआ. इनमें से ही एक हैं पराधीन भारत के ज्वलंत क्रांतिकारी मदन लाल ढींगरा.

मदन लाल ढींगरा को अंग्रेज अफसर कर्ज़न वाईली की हत्या के आरोप में फांसी पर लटका दिया गया था. इस देशभक्त को दफन होने के लिए देश की धरती भी नसीब नहीं हुई थी पर देश आज भी इस युवा क्रांतिकारी को याद करता है.

मदन लाल ढींगरा का जन्म 18 सितंबर, 1883 (जन्मतिथि का कोई ठोस सबूत नहीं है) एक हिंदू खत्री परिवार में हुआ था. उनके पिता दित्तामल एक मशहूर और धनी सिविल सर्जन थे. घर में पैसे की कोई कमी नहीं थी और शिक्षा के लिहाज से भी उनकी स्थिति बेहद मजबूत थी. मदनलाल ढींगरा का परिवार शुरुआत में अंग्रेजी हुकूमत की तारीफ करता था पर मदनलाल को यह पसंद नहीं था.

जब मदनलाल को भारतीय स्वतंत्रता सम्बन्धी क्रान्ति के आरोप में लाहौर के एक कॉलेज से निकाल दिया गया तो परिवार ने मदनलाल से नाता तोड़ लिया. मदनलाल को अपना खर्चा चलाने के लिए क्लर्क, तांगा-चालक और एक कारखाने में श्रमिक के रूप में काम करना पड़ा. वहां उन्होंने एक यूनियन (संघ) बनाने की कोशिश की किन्तु वहां से भी उन्हें निकाल दिया गया. कुछ दिन उन्होंने मुंबई में भी काम किया. अपने बड़े भाई की सलाह पर वे सन् 1906 में उच्च शिक्षा के लिये इंग्लैण्ड गए जहां यूनिवर्सिटी कालेज लन्दन में यांत्रिक प्रौद्योगिकी में प्रवेश लिया. इसके लिये उन्हें उनके बड़े भाई एवं इंग्लैण्ड के कुछ राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं से आर्थिक मदद मिली.

"इंडिया हाउस" नामक एक संगठन में, जो उन दिनों भारतीय विद्यार्थियों के राजनैतिक क्रियाकलापों का केन्द्र था, वहां मदनलाल ढींगरा भारत के प्रख्यात राष्ट्रवादी विनायक दामोदर सावरकर एवं श्यामजी कृष्णवर्मा के सम्पर्क में आए. उन दिनों सावरकर जी बम बनाने और अन्य शस्त्रों को हासिल करने की कोशिशें कर रहे थे. सावरकर जी, मदनलाल की क्रांतिकारी भावना और उनकी इच्छाशक्ति से बहुत प्रभावित हुए. सावरकर ने ही मदनलाल को अभिनव भारत मण्डल का सदस्य बनवाया और हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया. इसके बाद मदनलाल, वीर सावरकर के साथ मिलकर काम करने लगे. कई लोग मानते हैं कि उन्होंने वाइसराय लॉर्ड कर्ज़न को भी मारने की कोशिश की थी, पर वह कामयाब नहीं हो पाए थे. इसके बाद सावरकर जी ने मदनलाल को साथ लेकर कर्ज़न वाईली को मारने की योजना बनाई और मदनलाल को साफ कह दिया गया कि इस बार किसी भी हाल में सफल होना है.

01 जुलाई, 1909 की शाम को इण्डियन नेशनल एसोसिएशन के वार्षिकोत्सव में भाग लेने के लिये भारी संख्या में भारतीय और अंग्रेज इकट्ठे हुए. इसमें सर कर्जन वायली भी शामिल थे. इसी दौरान मदनलाल, कर्ज़न वाईली से कुछ खास बात करने के बहाने उनके समीप पहुंचे और उन्हें गोली मार दी. मदन लाल के हाथों सर कर्जन वायली के साथ उनको बचाने आए पारसी डॉक्टर कावसजी लालकाका की भी मौत हो गई. मदनलाल ने मौके से भागने की जगह आत्म-हत्या का विचार किया पर इससे पहले ही उन्हें पकड़ लिया गया. कर्जन वाईली और पारसी डॉक्टर कावसजी लालकाका की हत्या के आरोप में उनपर 23 जुलाई, 1909 को अभियोग चलाया गया. अंत में 17 अगस्त, 1909 को उन्हें फांसी दे दी गई. भारत समेत ब्रिटेन में भी मदनलाल के समर्थन में आवाजें उठीं पर उन्हें नजरअंदाज कर दिया गया.अंग्रेजों की तानाशाही की वजह से उनके शरीर को, ना ही उनके परिवार और ना ही सावरकर जी को सौंपा गया. मदनलाल ढींगरा को लंदन के पेण्टोविले की जेल में फ़ांसी पर चढाया गया. यह वही जेल थी जहां अमर बलिदानी उधमसिंह को भी फांसी दी गई थी.

देश अपने शूरवीर क्रांतिकारियों पर हमेशा से गर्वान्वित रहा है और आगे भी रहेगा. भले ही लोग मदनलाल ढींगरा जैसे वीरों की शहादत को भूल जरूर गए हैं, लेकिन उनकी जांबाजी और देशभक्ति की भावना को चाहकर भी भुलाया नहीं जा सकता.

अमर बलिदानी वीरांगना उदा बाई

भारत की आजादी के लिए दुस्साहसिक संघर्ष करने वाली वीरांगनाओं ,जैसे कि झांसी की रानी, बेगम हजरत महल, मातंगिनी हजरा, लक्ष्मी सहगल समेत तमाम महिलाओं की गौरव-गाथाएँ इतिहास की किताबों में दर्ज हैं । लेकिन इस संघर्ष में अपने राष्ट्रप्रेम और दुस्साहस का परिचय देने वाली कई वीरांगनाओं की गौरव-गाथाएँ आज भी गुमनाम हैं । ऐसा ही गौरव-गाथा लखनऊ की अमर बलिदानी ऊदा देवी का है। ऊदा देवी पासी जाति से ताल्लुक रखती थीं । ऊदा देवी ने लखनऊ के सिकंदरबाग में करीब 36 ब्रिटिश सैनिकों को अकेले ही मौत के घाट उतारते हुए अपने प्राण न्योच्छावर कर दिए थे।

ऊदा देवी का जन्म 30 जून 1832 को राजधानी के उजरियांव में हुआ था, हालांकि इतिहासकारों में भी उनके जन्म की तारीख को लेकर विरोधाभास है। ऊदा के पिता का नाम चौधरी राय साहब था । ऊदा देवी की शादी चिनहट के रहने वाले मक्का पासी नाम के युवक से कम उम्र में ही कर दी गई थी। ऊदा देवी को जगरानी के नाम से भी जाना जाता था। इनके पति मक्का पासी वाजिद अली शाह के दस्ते में थे। वाजिद अली शाह अमजद अली शाह के पुत्र थे। अवध और लखनऊ पर छठवें नवाब के तौर पर वाजिद अली शाह ने गद्दी संभाली थी। देश की आजादी के लिए मक्का पासी को देखकर ऊदा देवी ने प्रेरणा ली थी। बताया जाता है कि इसके बाद वे वाजिद अली शाह के महिला दस्ते में शामिल हो गई थीं। जानकारों की मानें तो सन 1856 में अवध का अंग्रेजी राज्य में विलय कर दिया गया था। इस दौरान नवाब वाजिद अली शाह को नवाब के पद से हटाकर कोलकाता भेज दिया गया।

वर्ष 1857 में भारतीयों ने अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता का बिगुल बजा दिया था। इस समय अवध की राजधानी लखनऊ की और वाजिद अली शाह की बेगम हजरत महल और उनके पुत्र बिरजिस कादरी ने अवध की सत्ता पर अपना दावा ठोंक दिया था। अवध की सेना में एक टुकड़ी पासी सैनिकों की भी थी। इस पासी टुकड़ी में बहादुर युवक मक्का पासी भी था। कहा जाता है कि जब बेगम हजरत महल ने अपनी महिला टुकड़ी का विस्तार किया, तब ऊदा की जिद्द और उत्साह देखकर मक्का पासी ने सेना में शामिल होने की इजाजत दी थी। शीघ्र ही ऊदा देवी अपनी टुकड़ी की नेतृत्व कर्ता के रूप में उभरने लगीं। वाजिद अली शाह की ताजपोशी के एक दशक बाद यानी 1857 का साल रहा होगा। देश की आजादी का पहला गदर लगभग शुरू हो चुका था। कहा जाता है 10 जून 1857 को अंग्रेजों ने अवध पर हमला कर दिया।

लखनऊ के इस्माइल गंज में अंग्रेजों से भारतीय सैनिक की एक टुकड़ी लड़ रही थी। इस युद्ध में ऊदा देवी के पति मक्का पासी भी थे। अंग्रेजों से लड़ते-लड़ते मक्का शहीद हो गए। यह खबर जब ऊदा देवी तक पहुंची तो उनका खून खौल उठा। ऊदा ने उसी वक्त अंग्रेजों से पति की हत्या का बदला लेने का फैसला कर लिया था। बात 1857 ई। की ही है, जब राजधानी स्थित सिकंदर बाग में ब्रिटिश फौज और आजादी के दीवानों के बीच युद्द हो रहा था। विद्रोह को दबाने के लिए अंग्रेजी फौज लखनऊ की तरफ बढ़ रही थी। भारतीय लड़ाके सिकंदराबाद में पोजीशन लिए हुए थे। इसमें ऊदा देवी भी शामिल थीं। ऊदा देवी के सीने में पति की हत्या की आग पहले से ही जल रही थी। अंग्रेजी फौज सिकंदर बाग में प्रवेश करती है, उससे पहले ही ऊदा एक पीपल के पेड़ पर चढ़ गईं।

वीरांगना ऊदा देवी ने लगातार गोलियां बरसाते हुए अंग्रेजी सेना को बाग में प्रवेश करने से रोके रखा। पेड़ की आंड़ में गोली चलाने की वजह से अंग्रेजी सेना को समझ नहीं आ रहा था कि गोलियां कहां चल रही हैं। ऊदा देवी ने करीब 36 अंग्रेजी सैनिकों को एक-एक कर मौत के घाट उतार दिया। अंग्रेजों को सैनिकों के मारे जाने की खबर मिलते ही जब देखा तो पता चला की गोलियां पेड़ से चलाईं जा रही हैं। जिसके बाद अंग्रेजों ने पेड़ पर ही गोलियां चलाना शुरू कर दिया। ताबड़तोड़ गोलीबारी में ऊदा की सिकंदरबाग में 16 नवंबर 1857 मौत हो गई। इतिहासकार बताते हैं कि उस दौरान अंग्रेजी सैनिक की अगुवाई जनरल कॉल्विन कैंबल कर रहे थे। कहते हैं कि जब अमर बलिदानी वीरांगना के पार्थिव शरीर के पास कॉल्विन कैंबल पहुंचे तो वो उनकी वीरता को देखकर ऐसे भावुक हुए कि वो उन्हें सैल्यूट किये बिना ना रह सके।

लखनऊ के हजरतगंज के बाद दूसरा चौराहा सिकंदर बाग का है। चौराहे के ठीक बगल में एक दरवाजा है, जिसे सिकंदरबाग का दरवाजा कहते हैं। लखनऊ का सबसे बड़ा नरसंहार सिकंदर बाग में हुआ था। जहां पर 1857 में अंग्रेजी फौजों ने लगभग 2200 आजादी के दिवानों को गोलियों से मौत के घाट उतार दिया था। कहा जाता है कि इनकी लाशें यहां तब तक पड़ी रही, जब तक उनको चील-कौवों ने पूरी तरह से नोंच नहीं लिया था। इस बाग का निर्माण नवाब सआदत अली खान ने लगभग अट्ठारह सौ में शुरू किया था। यह बाग करीब साढ़े 4 एकड़ में फैला हुआ है। नवाब वाजिद अली शाह ने इसका नाम अपनी बेगम सिकंदर महल के नाम पर रखा था। कहा जाता है कि सिकंदरबाग को बनवाने के लिए वाजिद अली शाह ने 50,0000 खर्च किए थे। इसमें एक मंडप, छोटी सी मस्जिद और रहने के लिए कोठी बनवाई। इसमें तीन दरवाजे थे। एक दरवाजा गोमती नदी की तरफ था। जिसे अंग्रेजों ने ध्वस्त कर दिया। मौजूदा वक्त में केवल एक ही दरवाजा है। दरवाजे पर दो मछली बनी हुई हैं। वाजिद अली शाह के दरबार में चित्र कला में महारत हासिल करने वाले काशीराम हुआ करते थे। कहा जाता है काशीराम की चित्रकारी आज भी दरवाजों के अंदर बनी हुई है, जिसे देखा जा सकता है। बाग में ऊदा देवी की एक मूर्ति भी स्थापित की गई है। जिस पेड़ पर चढ़कर ऊदा देवी ने अंग्रेजों को मौत की नींद सुलाया था, उस पेड़ का नामोनिशान खत्म हो चुका है।

Unbelievable Facts!

Snakes can predict earthquakes: Did you know that snakes have a sixth sense? These slithery creatures can sense an upcoming earthquake from a staggering 75 miles away, up to five whole days before it happens.

Astronauts grow taller in space: Do you ever dream of becoming an astronaut and exploring the vastness of space? Well, you might grow a little bit taller. When astronauts venture into space, the lack of gravity allows their spines to stretch out, making them taller. How cool is that? Just imagine reaching for the stars and coming back taller than before.

Sea Lions are the only animals who can clap to a beat: Sea Lions are not only adorable creatures but are also the only animals capable of clapping to a beat. They have rhythm!

Glass balls bounce higher than rubber balls: If you were given a glass ball and a rubber ball, which one do you think would bounce higher? Surprisingly, it's the glass ball! The unique properties of glass can make it bounce even higher than a rubber ball. Just be careful not to drop it!

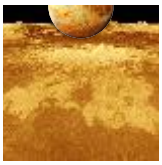

It snows metal on Venus: Venus, our neighboring planet, is known for its extreme conditions. Did you know that it even has "snow"? Don't expect fluffy white flakes like on Earth! The snow on Venus is made of metal! Imagine a world where it rains metal. Venus is truly out of this world!

Adult cats only meow to humans, not other cats: Cats are fascinating creatures, and their meows have a special purpose. While adult cats communicate with each other using body language and other sounds, they exclusively reserve their adorable meows for humans.

We spend a year on the toilet in our lifetime: We all know that nature calls, but did you know just how much time we spend? On average, over the course of our lives, we spend an entire year sitting on the toilet. That's a lot of time for deep thoughts and daydreaming.

There's a 50% chance that two people will share a birthday in a group of 23 people: Have you ever been in a group of 23 people and discovered that two people share the same birthday? This mind-boggling phenomenon is known as the Birthday Paradox. Surprisingly, with just 23 people, there's a 50% chance that two of them will have the same birthday. It's a statistical surprise that keeps mathematicians scratching their heads!

Funkaar

Stree

By Jyoti Sharma
Dy. Vice President - Training
Emp Code - 12548

Kya hai stree?
Vansh aage badhane ka ek zariya
Ya ghar sambhalne wali baayi
Ya fir pati k armaan poore karne wali daasi
Kya hai stree?
Durga kaali k roop me shakti ka prateek
Ya fir ek abala jo aj bhi dahej ki aag mei jhulas rahi hai
Har gali nukkad mei beaabroo ki ja rahi hai
Kya hai stree?
Kalpana chawla ki tarah aasmaan chhune wali naari
Ya fir wo jo ghar ki char diwari me har pal apni ikcchaon ko hai maarti
Ya fir wo jisko kilkariyan bharne se pehle hi garbh me maar diya jata hai
Kya hai stree?
Dilwale raj ki simran jo use palkon pe bitha k rakhta hai
Ya fir wo jiske sapne har raat pati k ghar aate hi toot jaate hain
Ya fir wo budhi maa jiska beta uska samarpann bhool biwi ka ho gaya hai
Kya hai stree?
Wo vaishya jo har raat peit paalne k liye mardon ko rijhati hai
Ya fir wo jo har subah car chala kar office jati hai
Ya fir wojo sanyasi bann kar prabhu sewa mei leen ho jaati hai
Yehi hai stree, ye sab uske roop hain
Wo kabhi chaaon, to kabhi dhoop hai
Kabhi shakti to kabhi abala hai
Kabhi premika to kabhi patni hai
Kabhi prem to kabhi agni hai
Kabhi chanchal hirni kabhi titli si
Kabhi hawa mand mand kabhi bijli si
Kabhi udaas to kabhi thahaka hai
Kabhi shaant saumya to kabhi patakha hai
Kabhi chanda si thandak kabhi suraj ki garmi hai
Kabhi krodh me jalti kabhi chahat ki narmi hai
Haan ye sab mere roop hain
Mai hi shrishti ki janani mai hi vinaash hu
Tu dhoondta har pal jise, haan mai wahi talaash hun
Teri zidd teri har baat maanungi jab tak tujhse pyaar hai
Mere sabr ki pareeksha na le, ye vyarth hai bekaar hai
Wo ek din bhi aayega jab tu mujhe teri manmaniyon ki giraft se bahar payega
Bas ab har din mujhe us din ka intezaar hai
Us din ka intezar hai.....

Motivational column by Sandeep Kumar

When It Rains, Look for Rainbows

SANDEEP KUMAR
AVP, TRAINING DEPARTMENT

When It Rains, Look for Rainbows

My biggest inspiration is none other than the proud of India our only Missile Man…He is Dr. APJ ABDUL KALAM

In his life he has had many struggles in his early ages. He was born in Rameshwaram on 15 October 1931. He was the 11th President of India. In his childhood he suffered a lot. His father was an owner of a boat and an imam at a mosque. Due to some reason (I don't want to go in detail) their family business collapsed, and everything came on his shoulder. He wakes up at 4am early in the morning and uses to distribute the newspaper to earn something for his family. He went to school, and he was an average grade student, but he was described as a bright and hardworking student who has a very strong desire to learn new things. While during his college days he was also working on a side project. His dean was not happy with him and thus gave Kalam a lot of stress but Kalam with a lot of hard work impressed his dean.

He studied aerospace engineering and physics and spent the next four decades in DRDO and ISRO. And he was then initially involved in India' s civilian space program and military Missile development efforts. He has given many inspirational speeches at many colleges. He died giving speech at IIM Shillong.

He received many awards.

He won: Bharat Ratna (1997)

Padma Bhusan (1981)

Padma Vibhusan (1990)

After a storm passes, we see them as symbols of better things, and they often lift our spirits high. Seeing the rainbow is always a wonderful thing. The rainbow is a symbol of hope, inspiration, promise, good fortune, and wishes coming true.If you're in the middle of a storm in your life waiting for the rainbow, remember that anything magnificent often requires a battle, struggle, and patience.

Imagine this: You're late for work, you can't find your shoes, your coffee maker isn't working, you can't get a cab, you missed the train, you arrive at your office and no one's there. Oh wait, it's Sunday.

This is just one of those situations that will make you pull the hair out of your head but never let these things push your positivity to the curb. There's always a good in all the bad, there's always a silver lining, we just have to open our eyes and look for it.

I'm not saying that that's an easy thing to do because it's not. It's hard to look for it when all you want to do is lock yourself in your room, hug your pillow, and eat ice cream. Or quit your job. Or give up on that dream of yours. But when everything seems to be going wrong… close your eyes, take a deep breath, and remind yourself that it's just a bad moment, not a bad life.

Think of how beautiful the sunrise was when you woke up early. Think of how you found your missing earring when you were looking for your shoes under your bed. Think of how refreshing that orange juice you brought to work instead of coffee. Think of the work out you were able to squeeze in when you walked to work because you couldn't get a cab.

Choose to see the good in everything. And trust me, it will make your life so much better.

Rain and darkness don't typically result in happy, positive emotions. And if we had to choose between a hundred days of dreary weather and a hundred days of sunshine, we'd most likely choose the latter. But sometimes life gives us a hundred days of rain: a hundred days of darkness. Basically, have to go through some crap for what feels like an excruciatingly long time. The light ahead may be far away or seem nonexistent. It reminds us that in the midst of the rain and darkness we can look for the things that bring us joy.

For me this means something like there is always a light at the end of the tunnel. So basically, always look for something in a bad situation that will give you hope. Even if it's the smallest piece of hope! There will always be a small star or light rainbow…And that simple one-line quote is just telling us that no matter what kind of storm is going on in our lives – we'll weather that storm a lot better if we'll just try to look for the brighter side of it.

Conclusion

It isn't the load that's going to break us down – it's how we carry that load that's most important.

SATYA
सर्वे भवन्तु सुखिनः

SAFAL sutra

SATYA'S FUTURE ASPIRING LEADERS

Congratulations

Let's Grow Together

सर्वे भवन्तु सुखिनः

Rohit Prasad
11520
Sr. EDO (Aliganj)

Abhishek Jaiswal
12067
Sr. EDO (Uruwa Bazar)

Shivam Kumar
12680
Sr. EDO (Gajraula)

Nitish Kumar
13795
Sr. EDO (Chakia)

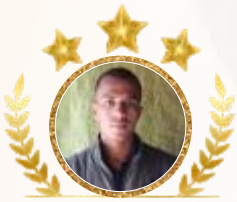

Durgadatt Dubey
12338
Sr. EDO (Ghazipur)

Sudarshan Kumar
12797
Sr. EDO (Hapur)

Sunil Kumar
13376
Sr. EDO (Virat Nagar)

Sanjay Yadav
12386
Sr. EDO (Varanasi)

Shyam Kishor Prasad
13030
Sr. EDO (Barauli)

Bhagwan Ram
13525
Sr. EDO (Jodhpur)

Vishal Rana
12441
Sr. EDO (Meerut)

Rajesh Kumar
13112
Sr. EDO (Saharanpur)

Ravendra Singh
13543
Sr. EDO (Kithore)

Amit Gangwar
12616
Sr. EDO (Rudrapur)

Shanu Kumar
13333
Sr. EDO (Paonta Sahib)

Jitendra Gavar
13674
Sr. EDO (Siyana)

SATYA
सर्वे भवन्तु सुखिनः

SAFAL sutra

SATYA'S FUTURE ASPIRING LEADERS

Congratulations

Let's Grow Together

Badal Mehra
14105
Sr. EDO (Kangra)

Sunil
14249
Sr. EDO (Indore)

Baria Maheshkumar
14758
Sr. EDO (Santrampur)

Jaykee Kumar
12096
Sr. EDO (Ropar)

Amit Kumar
14329
Sr. EDO (Nurpur-HP)

Vishnu Prasad Yadav
14920
Sr. EDO (Itarsi)

Bikram Das
12512
Sr. EDO (Asansol)

Gambheer Singh
14343
Sr. EDO (Kashipur)

Shanmukha D
15194
Sr. EDO (Davanagere)

Ashutosh Kumar
13169
Sr. EDO (Sultanpur)

Deevan Gir
14388
Sr. EDO (Shajapur)

Parmeshwar Chandra
15208
Sr. EDO (Bilaspur)

Purshottam Sharan
13335
Sr. EDO (Meerut)

Satyaprakash Sharma
14449
Sr. EDO (Dhampur)

Suraj Kumar
15426
Sr. EDO (Giridih)

Pankaj Kumar Bharti
13560
Sr. EDO (Barauli)

सर्वे भवन्तु सुखिनः

SATYA
सर्वे भवन्तु सुखिनः

SAFAL sutra

SATYA'S FUTURE ASPIRING LEADERS

Congratulations

Let's Grow Together

सर्वे भवन्तु सुखिनः

Jeevan Jyoti Dey
13852
Sr. EDO (Angul)

Sudhir Kumar
13960
Sr. EDO (Rajdhanwar)

Pramod Kumar
14426
Sr. EDO (Paonta Sahib)

Kanhaiya Kumar
14676
Sr. EDO (Mahua)

Vidyadhar Dixit
14070
Sr. EDO (Kushinagar)

Adarsh Kumar Tiwari
14526
Sr. EDO (Rs-Pura)

Ranjeet Kumar Sharma
14680
Sr. EDO (Rosera)

Deepak
14140
Sr. EDO (Gajraula)

Karan Singh
14527
Sr. EDO (Kithore)

Anand Kumar
14732
Sr. EDO (Daltonganj)

Pravesh Mohan
14219
Sr. EDO (Saharanpur)

Parmeshwar Chandra
15208
Sr. EDO (Bilaspur)

Adesh Kumar
15039
Sr. EDO (Rudrapur)

Jitendra Deora
14321
Sr. EDO (Jodhpur)

Shivam
14574
Sr. EDO (Behat (HP))

Raju Pradhan
15111
Sr. EDO (Anantpur)

SATYA
सर्वे भवन्तु सुखिनः

SAFAL sutra

SATYA'S FUTURE ASPIRING LEADERS

Congratulations

Let's Grow Together

सर्वे भवन्तु सुखिनः

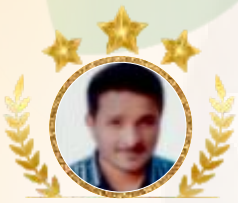

Ravi Sahu
15150
Sr. EDO (Bareli)

Rakesh Kumar Behera
15861
Sr. EDO (Tusura)

Pankaj Tiwari
15050
Sr. EDO (Sultanpur)

Ravi Kumar
15617
Sr. EDO (Sambhal)

Govind Jha
16175
Sr. EDO (Giridih)

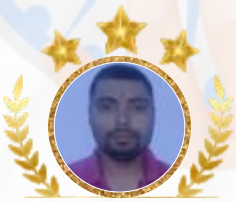

Shailesh Paswan
15117
Sr. EDO (Bihta)

Surendra Kumar
15826
Sr. EDO (Dalsinghsarai)

Gaurav Singh
13735
Sr. EDO (Kakod)

Suraj
15136
Sr. EDO (Dadri)

Dharmendra Kumar
15838
Sr. EDO (Jhabrera)

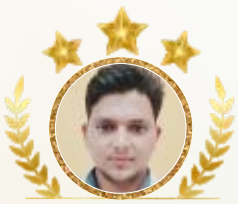

Ajeet Singh
13854
Sr. EDO (Meerut)

Karnajit Das
15320
Sr. EDO
(Dharmanagar)

Bruclee
15870
Sr. EDO (Jammu)

Saurabh Singh
14177
Sr. EDO (Gajraula)

Rajveer
15558
Sr. EDO
(Bilashpur (UK))

Chunnu Paswan
15926
Sr. EDO (Rosera)

SATYA
सर्वे भवन्तु सुखिनः

SAFAL sutra

SATYA'S FUTURE ASPIRING LEADERS

Congratulations

Let's Grow Together

सर्वे भवन्तु सुखिनः

Sagar Sharma
16136
Sr. EDO (Nahan-Shirmaur)

Raghvavendra Kumar Yadav
16186
Sr. EDO (Bilaspur(HP))

Dindayal Panda
16449
Sr. EDO (Pattamundai)

Prasanna Barik
16452
Sr. EDO (Dharmagarh)

Shyam Sundar Naik
16617
Sr. EDO
(Bhawanipatna)

Lokesh Kumar
15615
Sr. EDO (Dhampur)

Sumit Kumar
14295
Sr. EDO (Gajraula)

Yogendra Kumar
14631
Sr. EDO (Siyana)

Lad Singh
14424
Sr. EDO (Shajapur)

Pinku
10285
Sr. EDO (Dadri)

Ashutosh Raj
14544
Sr. EDO (Daltonganj)

Venkatesan N
13837
Sr. EDO (Villupuram)

Subhash Kumar Verma
13956
Sr. EDO (Rajdhanwar)

क्लाइंट स्टोरी

शोभा देवी
मंडी, हिमाचल प्रदेश,

कठिन परिस्थितियों के बीच में भगवान हमें प्रकाश की किरण दिखाते हैं। ऐसा ही कुछ हुआ दो बच्चों की मां शोभा देवी के साथ। शोभा के पति एक वेल्डर हैं और अपने परिवार को आजीविका प्रदान करने के लिए दिन रात काम करते हैं। लॉकडाउन के दौरान उनके पति का वेल्डिंग का काम बंद हो गया था। समय बीतने के साथ उनकी वित्तीय स्थिति बहुत ख़राब हो गई थी लेकिन फिर भी उन्होंने कभी अपनी उम्मीदें नहीं छोड़ी। शोभा ने खुद काम करने और अपने परिवार की आय में आर्थिक योगदान देने का फैसला किया। उसे मेकअप और स्टाइलिंग का शौक था, इसलिए उसने अपने बच्चों के लिए एकमात्र प्रदाता के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए अपने कौशल का उपयोग करने के बारे में सोचा। शोभा के पास कौशल तो था लेकिन अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए उनके पास उचित धनराशि नहीं थी। उसे श्रण की आवश्यकता थी किन्तु बैंक द्वारा मांगे गए दस्तावेजों की कमी के कारण वह किसी भी बैंक से ऋण प्राप्त करने में असमर्थ थी।

उन्हें अपने पड़ोस की महिलाओं के माध्यम से सत्या माइक्रोकैपिटल लिमिटेड के बारे में पता चला जो कम आय वाले परिवारों को माइक्रो क्रेडिट प्रदान करती है। ये देख शोभा इस ग्रुप से जुडी और उसने 40,000 रुपये का ऋण लेकर अपना ब्यूटी पार्लर खोला। उनके मुताबिक संस्था ने उन्हें एक जीवनरेखा प्रदान की है, अब उसका एक पार्लर सफलतापूर्वक चल रहा है। शोभा प्रतिदिन औसतन 1,000-1,200 रुपये का व्यवसाय करती हैं, जिससे उन्हें 700-800 रुपये की दैनिक आय होती है। अपनी कभी न खत्म होने वाली ताकत के साथ, उन्होंने अपने पार्लर के निर्माण और विस्तार की दिशा में काम किया। शोभा ने न केवल व्यवसाय का श्रेय स्वीकार किया बल्कि अपने बच्चों के लिए एक मजबूत रोल मॉडल बन गईं, जैसा कि आमतौर पर सभी पिता होते हैं। साथ ही, वह काम की तलाश कर रही महिलाओं को नौकरी दिलाने का जरिया भी रही हैं।

वह आज भी उसी उत्साह से काम करती हैं, जैसे शुरुआत में करती थीं। वह अपने बच्चों की देखभाल और उनके भविष्य को सुरक्षित करने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके एक माँ के रूप में अपने कर्तव्यों को भी पूरा करती है। अब, वह एक अच्छी जीवनशैली का आनंद ले पा रही है। वह वित्तीय सहायता के लिए सत्या माइक्रोकैपिटल के प्रति अपना आभार व्यक्त करती है जिसने उसे अपनी महत्वाकांक्षा को साकार करने में सशक्त बनाया।

पंचतंत्र की कहानियाँ

दोस्तों, पंचतंत्र की कहानियाँ हम सभी ने बचपन में सुनी ही होंगी। अक्सर पंचतंत्र नाम के उच्चारण से हमें ऐसा प्रतीत होता हैं की हम किसी बड़े नीतिशास्त्र के बारे में चर्चा कर रहे हैं। वैसे देखा जाये तो पंचतंत्र का असली नाम 'नीति शास्त्र' ही हैं। पंचतंत्र कि मूल रचना संस्कृत भाषा में पंडित विष्णु शर्मा ने की थी।

संस्कृत की नीति कथाओं में पंचतंत्र का प्रथम स्थान हैं। पंचतंत्र की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता हैं कि यह विश्व की 50 से भी अधिक अलग-अलग भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका हैं।

पंचतंत्र को मुख्य रूप से 5 भागों में बांटा गया हैं:

1. **मित्रभेद (मित्रों में मनमुटाव व अलगाव),**
2. **मित्रलाभ अथवा मित्रसंप्राप्ति (मित्र प्राप्ति और उसके लाभ),**
3. **काकोलुकीयम् (कौवे एवं उल्लुओं की कथा),**
4. **लब्धप्रणाश (हाथ लगी चीज (लब्ध) का हाथ से निकल जाना),**
5. **अपरीक्षित कारक (जिसको परखा नहीं गया हो उसे करने से पहले सावधान रहें ; हड़बड़ी में कदम न उठायें)।**

पंचतंत्र की कहानियों में पात्रों में मनुष्य के अलावा पशु-पक्षी भी हैं, उनके माध्यम से कई शिक्षाप्रद बातें बतलाई गयी हैं।

पंचतंत्र का इतिहास

पंचतंत्र का इतिहास बहुत ही रोचक हैं। लगभग 2000 साल पहले पूर्व दक्षिण के किसी जनपद में एक नगर था महिलारोप्य। वहाँ का राजा अमरशक्ति बड़ा ही पराक्रमी तथा उदार था। संपूर्ण कलाओं में पारंगत राजा अमरशक्ति के तीन पुत्र थे बहुशक्ति, उग्रशक्ति तथा अनंतशक्ति। राजा स्वयं जितना ही नीतिज्ञ, विद्वान्, गुणी और कलाओं में पारंगत था, दुर्भाग्य से उसके तीनों पुत्र उतने ही उद्दंड, अज्ञानी और दुर्विनीत थे।

राजा अमरशक्ति ने अपने लड़कों को व्यावहारिक शिक्षा देने का बहुत प्रयास किया लेकिन उन पर किसी बात का असर नहीं हुआ। थक-हारकर एक राजा ने अपने मंत्रीमंडल से कहा कि "मूर्ख और अविवेकी पुत्रों से अच्छा तो निस्संतान रहना होता। पुत्रों के मरण से भी इतनी पीड़ा नहीं होती, जितनी मूर्ख पुत्र से होती है। मर जाने पर तो पुत्र एक ही बार दुःख देता है, किंतु ऐसे पुत्र जीवन-भर अभिशाप की तरह पीड़ा तथा अपमान का कारण बनते हैं।"

अमरशक्ति राजा ने कहा कि हमारे राज्य में हजारों विद्वान्, कलाकार एवं नीतिविशारद महापंडित रहते हैं। कोई ऐसा उपाय करो कि ये निकम्मे राजपुत्र शिक्षित होकर विवेक और ज्ञान की ओर बढ़ें।

अत्यंत विचार-विमर्श के बाद एक मंत्री सुमति ने राजा को बताया कि महाराज, व्यक्ति का जीवन-काल तो बहुत ही अनिश्चित और छोटा होता है। हमारे राजपुत्र अब बड़े हो चुके हैं। विधिवत् व्याकरण एवं शब्दशास्त्र का अध्ययन आरंभ करेंगे तो बहुत दिन लग जाएँगे। इनके लिए तो यही उचित होगा कि इनको किसी संक्षिप्त शास्त्र के आधार पर शिक्षा दी जाए, जिसमें सार-सार ग्रहण करके निस्सार को छोड़ दिया गया हो; जैसे हंस दूध तो ग्रहण कर लेता है, पानी को छोड़ देता है।

ऐसे में यदि राजकुमारों को शिक्षा देने और व्यवहारिक रूप से प्रशिक्षित करने का उत्तरदायित्व पंडित विष्णु शर्मा को सौंपा जाए जो कि हमारे ही राज्य में रहते हैं। उचित होगा सभी शास्त्रों में पारंगत विष्णु शर्मा की छात्रों में बड़ी प्रतिष्ठा है। आप राजपुत्रों को शिक्षा के लिए उनके हाथों ही सौंप दीजिए। वे अल्प समय में ही राजकुमारों को शिक्षित करने की समर्थ रखते हैं।

राजा अमरशक्ति अपने मंत्री के इस सुझाव से अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने तुरंत महापंडित विष्णु शर्मा का आदर-सत्कार करने के बाद विनय के साथ अनुरोध किया, "आर्य, आप मेरे पुत्रों पर इतनी कृपा कीजिए कि इन्हें अर्थशास्त्र का ज्ञान हो जाए। मैं आपको दक्षिणा में सौ गाँव प्रदान करूँगा।"

पंडित विष्णु शर्मा ने कहा की "राजन में अपनी विद्या का विक्रय नहीं करता हूँ, मैं सौ गाँव के बदले में अपनी विद्या बेचूंगा नहीं। लेकिन मैं आपको वचन देता हूँ कि मैं मात्र 6 माह में आपके पुत्रों को नीतियों में पारंगत कर दूंगा। यदि ऐसा न हुआ तो ईश्वर मुझे विद्या शुन्य कर दे।"

पंडित विष्णु शर्मा कि यह भीष्म प्रतिज्ञा सुनकर राजा अमरशक्ति स्तब्ध रह गये।

राजा अमरशक्ति ने मंत्रियों के साथ विष्णु शर्मा की पूजा-अभ्यर्थना की और तीनों राजपुत्रों को उनके हाथ सौंप दिया। पंडित विष्णु शर्मा तीनों राजकुमारों को अपने आश्रम ले आये। विष्णु शर्मा ने राजकुमारों को अलग-अलग प्रकार की नीतिशास्त्र से संबंधित कहानियां सुनाई।

पंचतंत्र कहानियों के पात्रों में मनुष्य, पशु-पक्षी आदि का वर्णन किया और अपने विचारों को उन पात्रों के मुख से व्यक्त किया। उनको पात्रों को आधार बनाकर पंडित विष्णु शर्मा ने राजकुमारों को उचित-अनुचित और व्यावहारिक ज्ञान में प्रशिक्षित किया। राजकुमारों की शिक्षा पूरी होने के बाद विष्णु शर्मा ने उन कहानियों को पंचतंत्र कि कहानियों के रूप में संकलित किया।

वर्तमान में उपलब्ध प्रमाणों के आधार यह कहा जा सकता हैं कि पंचतंत्र ग्रंथ की रचना पूरी होने के दौरान पंडित विष्णु शर्मा की उम्र लगभग 80 वर्ष की रही होगी। वे दक्षिण भारत के महिलारोप्य नामक नगर में रहते थे।

पंडित विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र की कहानियों को बेहद रोचक तरीके से पेश किया हैं। यह कहानियां मनोविज्ञान, व्यावहारिकता तथा राजकार्य से सिधान्तों की सीख देती है। पंचतन्त्र की कहानियां बहुत जीवंत हैं। इनमे लोकव्यवहार को बहुत सरल तरीके से समझाया गया है। बहुत से लोग इस कहानियों को नेतृत्व क्षमता विकसित करने का एक सशक्त माध्यम मानते हैं।

इस कॉलम के माध्यम से हम हर संस्करण में आपके लिए पंचतंत्र की एक कहानी प्रकाशित करेंगे ।
आज की कहानी का शीर्षक है : "दुष्ट सर्प और कौवे" जो पंचतंत्र भाग - 1 मित्रभेद से ली गयी है।

एक जंगल में एक बहुत पुराना बरगद का पेड था। उस पेड पर घोंसला बनाकर एक कौआ-कव्वी का जोडा रहता था। उसी पेड के खोखले तने में कहीं से आकर एक दुष्ट सर्प रहने लगा। हर वर्ष मौसम आने पर कव्वी घोंसले में अंडे देती और दुष्ट सर्प मौक़ा पाकर उनके घोंसले में जाकर अंडे खा जाता। एक बार जब कौआ व कव्वी जल्दी भोजन पाकर शीघ्र ही लौट आए तो उन्होंने उस दुष्ट सर्प को अपने घोंसले में रखे अंडों पर झपटते देखा ।
अंडे खाकर सर्प चला गया कौए ने कव्वी को ढाडस बंधाया 'प्रिये, हिम्मत रखो। अब हमें शत्रु का पता चल गया हैं। कुछ उपाय भी सोच लेंगे।' कौए ने काफ़ी सोचा विचारा और पहले वाले घोंसले को छोड उससे काफ़ी ऊपर टहनी पर घोंसला बनाया और कव्वी से कहा 'यहां हमारे अंडे सुरक्षित रहेंगे। हमारा घोंसला पेड की चोटी के किनारे निकट हैं और ऊपर आसमान में चील मंडराती रहती हैं। चील सांप की बैरी हैं। दुष्ट सर्प यहां तक आने का साहस नहीं कर पाएगा।'

कौवे की बात मानकर कव्वी ने नए घोंसले में अंडे सुरक्षित रहे और उनमें से बच्चे भी निकल आए। उधर सर्प उनका घोंसला ख़ाली देखकर यह समझा कि कि उसके डर से कौआ कव्वी शायद वहां से चले गए हैं पर दुष्ट सर्प टोह लेता रहता था। उसने देखा कि कौआ-कव्वी उसी पेड से उडते हैं और लौटते भी वहीं हैं। उसे यह समझते देर नहीं लगी कि उन्होंने नया घोंसला उसी पेड पर ऊपर बना रखा हैं। एक दिन सर्प खोह से निकला और उसने कौओं का नया घोंसला खोज लिया। घोंसले में कौआ दंपती के तीन नवजात शिशु थे। दुष्ट सर्प उन्हें एक-एक करके घपाघप निगल गया और अपने खोह में लौटकर डकारें लेने लगा। कौआ व कव्वी लौटे तो घोंसला ख़ाली पाकर सन्न रह गए। घोंसले में हुई टूट-फूट व नन्हें कौओं के कोमल पंख बिखरे देखकर वह सारा माजरा समझ गए। कव्वी की छाती तो दुख से फटने लगी। कव्वी बिलख उठी 'तो क्या हर वर्ष मेरे बच्चे सांप का भोजन बनते रहेंगे?'

कौआ बोला 'नहीं ! यह माना कि हमारे सामने विकट समस्या हैं पर यहां से भागना ही उसका हल नहीं हैं। विपत्ति के समय ही मित्र काम आते हैं। हमें लोमडी मित्र से सलाह लेनी चाहिए।'

दोनों तुरंत ही लोमडी के पास गए। लोमडी ने अपने मित्रों की दुख भरी कहानी सुनी। उसने कौआ तथा कव्वी के आंसू पोंछे। लोमडी ने काफ़ी सोचने के बाद कहा 'मित्रो ! तुम्हें वह पेड छोडकर जाने की जरुरत नहीं हैं। मेरे दिमाग में एक तरकीब आ रही हैं, जिससे उस दुष्टसर्प से छुटकारा पाया जा सकता हैं।'
लोमडी ने अपने चतुर दिमाग में आई तरकीब बताई। लोमडी की तरकीब सुनकर कौआ-कव्वी खुशी से उछल पडें। उन्होंने लोमडी को धन्यवाद दिया और अपने घर लौट आए।
अगले ही दिन योजना अमल में लानी थी। उसी वन में बहुत बडा सरोवर था। उसमें कमल और नरगिस के फूल खिले रहते थे। हर मंगलवार को उस प्रदेश की राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ वहां जल-क्रीडा करने आती थी। उनके साथ अंगरक्षक तथा सैनिक भी आते थे।
इस बार राजकुमारी आई और सरोवर में स्नान करने जल में उतरी तो योजना के अनुसार कौआ उडता हुआ वहां आया। उसने सरोवर तट पर राजकुमारी तथा उसकी सहेलियों द्वारा उतारकर रखे गए कपडों व आभूषणों पर नजर डाली। कपडे से सबसे ऊपर था राजकुमारी का प्रिय हीरे व मोतियों का विलक्षण हार।
कौए ने राजकुमारी तथा सहेलियों का ध्यान अपनी और आकर्षित करने के लिए 'कांव-कांव' का शोर मचाया। जब सबकी नजर उसकी ओर घूमी तो कौआ राजकुमारी का हार चोंच में दबाकर ऊपर उड गया। सभी सहेलियां चीखी 'देखो, देखो ! वह राजकुमारी का हार उठाकर ले जा रहा हैं।'
सैनिकों ने ऊपर देखा तो सचमुच एक कौआ हार लेकर धीरे-धीरे उडता जा रहा था। सैनिक उसी दिशा में दौडने लगे। कौआ सैनिकों को अपने पीचे लगाकर धीरे-धीरे उडता हुआ उसी पेड की ओर ले आया। जब सैनिक कुच ही दूर रह गए तो कौए ने राजकुमारी का हार इस प्रकार गिराया कि वह सांप वाले खोह के भीतर जा गिरा।

सैनिक दौडकर खोह के पास पहुंचे। उनके सरदार ने खोह के भीतर झांका। उसने वहां हार और उसके पास में ही एक काले सर्प को कुडंली मारे देखा। वह चिल्लाया 'पीछे हटो ! अंदर एक नाग हैं।' सरदार ने खोह के भीतर भाला मारा। सर्प घायल हुआ और फुफकारता हुआ बाहर निकला। जैसे ही वह बाहर आया, सैनिकों ने भालों से उसके टुकडे-टुकडे कर डाले।

इस कहानी से क्या सीखें: सूझ बूझ का उपयोग कर हम बड़ी से बड़ी ताकत और दुश्मन को हरा सकते हैं, बुद्धि का प्रयोग करके हर संकट का हल निकाला जा सकता है।

Best Workplace in BFSI

Best Workplaces™ in BFSI
Great Place To Work®
INDIA 2023

Top 50
India's Best Workplaces™
in BFSI
2023

SATYA MicroCapital Ltd.

For inspiring trust among your people, instilling pride in them,
creating an environment that promotes camaraderie,
and delivering a great workplace experience for all your employees

Yeshasvini Ramaswamy
Chief Executive Officer
Great Place to Work® Institute, India

सर्वे भवन्तु सुखिनः

किस्सागोई

अकबर-बीरबल की कहानी :भुला हुआ वादा और ऊंट की गर्दन

बीरबल की सूझबूझ और हाजिर जवाबी से बादशाह अकबर बहुत खुश रहते थे। बीरबल किसी भी समस्या का हल चुटकियों में निकाल देते थे। एक दिन बीरबल की चतुराई से खुश होकर बादशाह अकबर ने उन्हें इनाम देने की घोषणा कर दी।

काफी समय बीत गया और बादशाह इस घोषणा के बारे में भूल गए। उधर बीरबल इनाम के इंतजार में कब से बैठे थे। बीरबल इस उलझन में थे कि वो बादशाह अकबर को इनाम की बात कैसे याद दिलाएं।

एक शाम बादशाह अकबर यमुना नदी के किनारे सैर का आनंद उठा रहे थे कि उन्हें वहां एक ऊंट घूमता हुआ दिखाई दिया। ऊंट की गर्दन देख राजा ने बीरबल से पूछा-"बीरबल, क्या तुम जानते हो कि ऊंट की गर्दन मुड़ी हुई क्यों होती है?"

बादशाह अकबर का सवाल सुनते ही बीरबल को अपनी इनाम की बात याद दिलाने का मौका मिल गया। बीरबल से झट से उत्तर दिया-"महाराज, दरअसल यह ऊंट किसी से किया हुआ अपना वादा भूल गया था, तब से इसकी गर्दन ऐसी ही है। बीरबल ने आगे कहा-"लोगों का यह मानना है कि जो भी व्यक्ति अपना किया हुआ वादा भूल जाता है, उसकी गर्दन इसी तरह मुड़ जाती है।"

बीरबल की बात सुनकर बादशाह हैरान हो गए और चिंतित भी हो गए। उन्हें डर लगने लगा कि कहीं उन्होंने भी तो किसी से किया हुआ कोई वादा न भुला दिया हो। तभी उन्हें बीरबल से किया हुआ अपना वादा याद आ गया। उन्होंने बीरबल से जल्दी महल चलने को कहा। महल पहुंचते ही बादशाह अकबर ने बीरबल को इनाम दिया और उससे पूछा-"अब मेरी गर्दन ऊंट की तरह तो नहीं हो जाएगी न?" बीरबल ने मुस्कुराकर जवाब दिया, "नहीं महाराज"। यह सुनकर बादशाह और बीरबल दोनों ठहाके लगाकर हंस दिए।

इस तरह बीरबल ने बादशाह अकबर को नाराज किए बगैर उन्हें अपना किया हुआ वादा याद दिलाया और अपना इनाम लिया।

किस्से से सीख :-

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें किसी से किया हुआ अपना वादा पूरा जरूर करना चाहिए।

ग्राहक सुरक्षा सिद्धान्त

ग्राहक सुरक्षा सिद्धान्त क्या है और क्यूँ ज़रूरी है?

ग्राहक सुरक्षा सिद्धांत उस देखभाल के मानक को स्पष्ट करते हैं जो ग्राहकों को वित्तीय सेवा प्रदाताओं के साथ व्यापार करते समय प्राप्त करने की अपेक्षा करनी चाहिए। ग्राहक सुरक्षा के सात सिद्धान्त होते हैं और एक जिम्मेदार वित्तीय सेवा प्रदाता को ग्राहको को वित्तीय सेवा प्रदान करते वक़्त इन सातों सिद्धांतों का नैतिकता से पालन करना चाहिए ताकि व्यवसाय को प्रभावी बनाया जा सके और ऐसा करते वक़्त किसी भी स्टेज पर ग्राहकों के हित का हनन न हो। यह सात सिद्धान्त इस प्रकार हैं:

1. उपयुक्त उत्पाद डिज़ाइन और वितरण - सत्या उत्पादों और वितरण चैनलों को डिजाइन करने के लिए पर्याप्त देखभाल करता है जिससे हमारे ग्राहकों को कोई नुकसान नहीं पहुंचे। उत्पादों और वितरण चैनलों को ग्राहक विशेषताओं के साथ डिज़ाइन किया जाता है।
2. अधिक कर्जभार से रोकथाम - सत्या क्रेडिट प्रक्रिया के सभी चरणों में पर्याप्त जांच करता है ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि ग्राहकों के पास ऋणग्रस्त होने के बिना चुकाने की क्षमता है।
3. पारदर्शिता - सत्या स्थानीय भाषा में स्पष्ट, पर्याप्त और सामयिक जानकारी का संचार करता है जिसे ग्राहक समझ सकते हैं ताकि ग्राहक सही निर्णय ले सकें।
4. जिम्मेदार मूल्य निर्धारण - मूल्य, नियम, और शर्तें इस तरह से सेट की जाती हैं कि ग्राहकों के लिए सस्ती हो और कंपनी को भी इससे कोई हानि न पहुंचे।
5. ग्राहक के साथ उचित और सम्मानजनक व्यवहार - सत्या ग्राहकों के साथ उचित और सम्मानपूर्वक व्यवहार करता है। हम भेदभाव नहीं करते। सत्या भ्रष्टाचार और अपमानजनक उपचार का पता लगाने और उसे ठीक करने के लिए पर्याप्त सुरक्षा उपाय सुनिश्चित करता है।
6. ग्राहक डाटा की गोपनीयता - व्यक्तिगत ग्राहक डेटा की गोपनीयता का सम्मान स्थानीय कानूनों और नियमों के अनुसार किया जाता है और इसका उपयोग केवल उन उद्देश्यों के लिए किया जाता है जिस उद्देश्य से ये जानकारियाँ एकत्र की गईं थीं और वह भी ग्राहक की सहमति के साथ।
7. ग्राहक शिकायत निवारण तंत्र - सत्या के पास ग्राहकों की शिकायतों और समस्या समाधान के लिए समयबद्ध और उत्तरदायी तंत्र हैं और समस्याओं को हल करने एवं उत्पादों और सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए उनका उपयोग किया जाता है।

सत्या जैसी जिम्मेदार संस्था के कर्मचारी होने के नाते हमारा यह फर्ज़ है कि हम सभी इन ग्राहक सुरक्षा सिद्धांतों का सख्ती से पालन करें तभी हम एक मजबूत एवं सतत कंपनी की नीव रख पाएंगे।

सत्या संदेश

SATYA संदेश यूट्यूब चैनल, माननीय MD sir की एक बड़ी सोच है, एक विस्तृत योजना है, जिसके माध्यम से कम्पनी एवं कम्पनी के बाहर के लोगों को विभिन्न विषयों के बारे में जागरूक किया जाता रहे।

अभी तक इस योजना के तहत स्वास्थ्य संबंधित जानकारियां एवं अन्य महत्वपूर्ण जानकारियां प्रस्तुत की जाती रही हैं। आने वाले समय में, इस चैनल के माध्यम से सुरक्षा एवं स्वरोजगार संबंधित जानकारियां भी प्रस्तुत की जाएंगी। अपने क्लाइंट्स की सफलता की कहानियां भी प्रस्तुत की जाएंगी।

चूंकि सोच बड़ी है और उद्देश्य जनहित से जुड़ा है, तो ज्यादा से ज्यादा लोगों के द्वारा इस चैनल के माध्यम से प्रस्तुत किये जाने वाले जानकारियों को स्वयं भी देखना चाहिए और अन्य लोगों को भी देखने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए ताकि इस चैनल का उद्देश्य पूरा हो सके।

इस चैनल को Subscribe करें, वीडियो को ज्यादा से ज्यादा लोगों को Share करें,
अगर वीडियो पसंद आये तो Like कर के उत्साहवर्धन करें।

https://www.youtube.com/channel/UCzXuJ7okWLWOSK70vKdpkdw

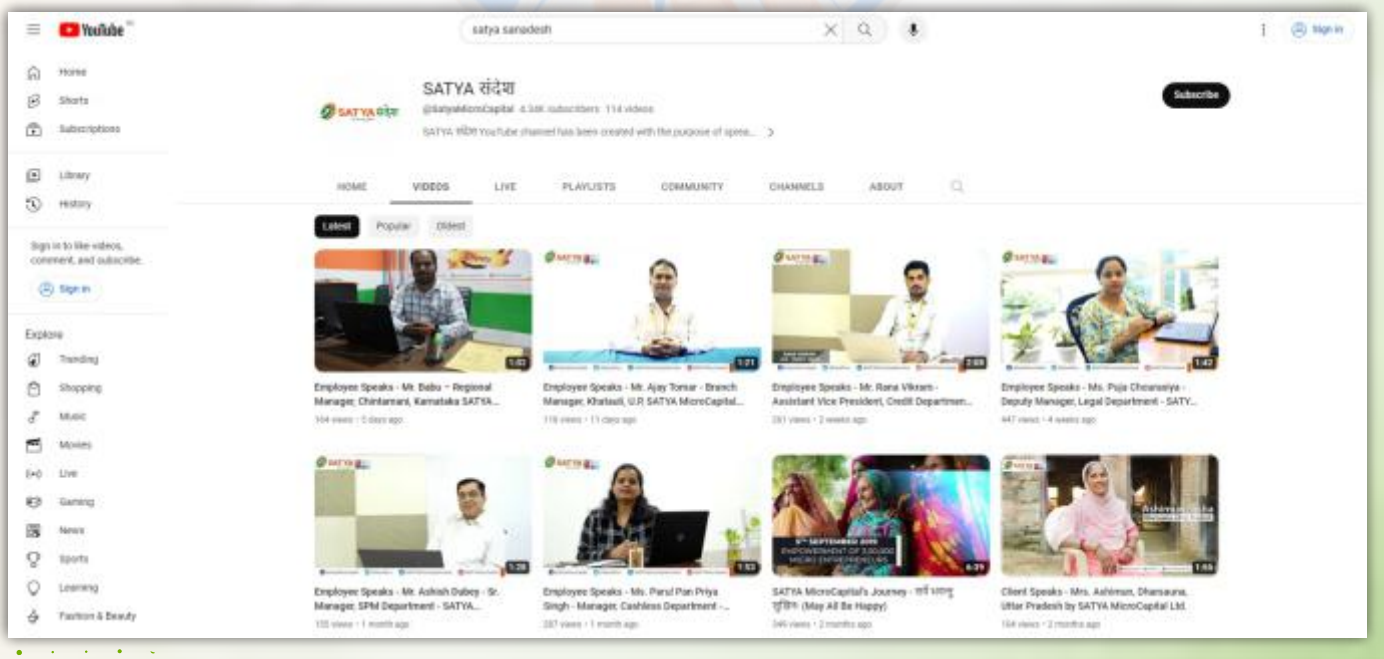

मानसून टिप्स

आयुर्वेद : मानसून में खुद को सवस्थ रखने हेतु हिदायतें

मानसून ताजगी का मौसम है, लेकिन यह अपने साथ कई स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी लेकर आता है। बरसात का मौसम वह समय होता है जब हमारा शरीर संक्रमण और बीमारियों के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील होता है। हालांकि, आयुर्वेद की मदद से हम स्वस्थ रह सकते हैं और इस मौसम की सुंदरता का आनंद ले सकते हैं। इस मानसून में स्वस्थ रहने के लिए यहां 5 आयुर्वेद उपाय बताए गए हैं.

1. **अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं:** आयुर्वेद में, रोग प्रतिरोधक क्षमता को "ओजस" कहा जाता है जो हमारे अच्छे स्वास्थ्य के लिए जिम्मेदार है। मानसून हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर कर देता है, जिससे हम संक्रमण और बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए आप अश्वगंधा, गुडुची और आमलकी जैसी आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों का सेवन कर सकते हैं। ये जड़ी-बूटियां प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने और शरीर को संक्रमण से बचाने में मदद करती हैं।

2. **हाइड्रेटेड रहें:** बारिश के मौसम में पर्याप्त पानी पीना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है और पाचन तंत्र को स्वस्थ रखता है। नींबू के रस और शहद की कुछ बूंदों के साथ गर्म पानी पीने से चयापचय को बढ़ावा देने और पाचन में सुधार करने में मदद मिल सकती है। ठंडा पानी पीने से बचें क्योंकि इससे श्वसन संक्रमण हो सकता है।

3. **हल्का और ताजा खाना खाएं:** मानसून के दौरान पाचन तंत्र कमजोर हो जाता है और भारी भोजन को पचाना मुश्किल हो सकता है। सूप, उबली हुई सब्जियां और दाल जैसे हल्के और ताजे खाद्य पदार्थ खाने से पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने में मदद मिल सकती है। तैलीय और तले हुए खाद्य पदार्थों से बचें क्योंकि वे अपच का कारण बन सकते हैं और संक्रमण का खतरा बढ़ा सकते हैं।

4. **स्वच्छता अपनाएं:** संक्रमण और बीमारियों से बचने के लिए मानसून के मौसम में अच्छी स्वच्छता बनाए रखना आवश्यक है। खाने से पहले, शौचालय का उपयोग करने के बाद और किसी बीमार व्यक्ति के संपर्क में आने के बाद हमेशा अपने हाथ धोएं। मच्छरों और अन्य कीड़ों के प्रजनन को रोकने के लिए अपने आस-पास को साफ और सूखा रखें।

5. **योग और ध्यान का अभ्यास करें:** योग और ध्यान शक्तिशाली उपकरण हैं जो मन और शरीर को स्वस्थ रखने में मदद कर सकते हैं। योग का अभ्यास शरीर को लचीला बनाए रखने और प्रतिरक्षा में सुधार करने में मदद करता है, जबकि ध्यान तनाव और चिंता को कम करने में मदद करता है। ये प्रथाएं नींद की गुणवत्ता में सुधार करने में भी मदद कर सकती हैं, जो स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है।

EGRM

प्रिय साथियों,

सत्या शुरुवात से ही अपने कर्मचारियों के लिए कुछ नया और बेहतर सोचती और करती चली आ रही है। कंपनी का यह मानना है कि किसी भी संस्था की शक्ति, उसकी ताक़त उसका कर्मचारी होता है जो उसे मज़बूत बनाता है। शायद इसलिए सत्या में हमेशा से ही मानव संसाधन विभाग को मानव पूँजी कहा जाता है क्यूंकि हम अपने स्टाफ़ को संसाधन नहीं, पूँजी समझते हैं।

कर्मचारियों के हित को ध्यान में रखते हुए कंपनी ने कर्मचारी शिकायत निवारण तंत्र (EGRM) स्थापित किया था जिसके तहत कंपनी का कोई भी कर्मचारी बिना झिझक अपनी बात / शिकायत / सुझाव एक टोल फ्री नंबर या ईमेल के माध्यम से कंपनी के समक्ष रख सकता है।

अपनी बात कहने के लिए, आप बिना किसी झिझक या डर के इस नंबर या ईमेल का उपयोग कर सकते हैं। आपकी समस्या का कंपनी के नियमानुसार उचित समाधान किया जायेगा।

Employee Grievance Redressal Mechanism

SATYA MicroCapital Limited welcomes your suggestions / information and complaints as you are an important part of the SATYA family, we would like to provide you a great place to work.

Grievance Redressal Officer will listen your complaint and redress it within seven days

Toll-Free-Number
1800-123-000008

E-mail: egrm@satyamicrocapital.com

रेसिपी

प्याज के पकौड़े की सब्जी (बिना तली हुयी)

बरसात के दिनों में तेल में गरमा-गरम छने हुए क्रंची पकौड़ों के प्रति लोगों का रुझान बढ़ जाता है. पकौड़े केवल नाश्ते के लिए ही नहीं बल्कि डिनर या लंच में भी स्वादिष्ट व्यंजन के रूप में इस्तमाल किये जाते हैं. भारत के कुछ प्रदेशों में कढ़ी-पकौड़े के व्यंजन का प्रचलन देखा जाता है. इस तरह के व्यंजन में प्याज के पकौड़े का इस्तमाल बेसन की कढ़ी के साथ किया जाता है. कुछ प्रदेशों में कढ़ी में बेसन के फुलौड़ी का प्रचलन है. जिसमें बेसन की सादी फुलौड़ी का इस्तमाल किया जाता है, जिसे बोलचाल की भाषा में बेसन की बड़ी या बेसन के लड्डू भी कहा जाता है.
आज हम आपको बताने जा रहे हैं प्याज के पकौड़े की सब्जी, लेकिन यह सब्जी होगी, कढ़ी नहीं, इसमें जो पकौड़े डलेंगे वो भी तेल में बिना तले हुए ही डालेंगे. तो ये व्यंजन कैसे बनेगा, इसे भली-भाँती समझ लें और इसे आप भी इस्तमाल करें.

सामग्री :

पकौड़े के लिए :

- मदो बड़े आकार के प्याज लम्बे आकार में मोटे-मोटे काटें
- 6 चम्मच बेसन
- आधा छोटा चम्मच लालमिर्च पाउडर
- आधा चम्मच हल्दी पाउडर
- एक हरी मिर्च बारीक कटी हुयी
- आधा इंच अदरक का टुकड़ा बारीक कटा हुआ
- स्वादानुसार नमक
- आधा कप पानी

पकौड़े की ग्रेवी के लिए ::

- एक बड़े आकार का प्याज बारीक कटा हुआ
- एक मध्यम आकार का टमाटर बारीक कटा हुआ
- एक गाँठ हरा धनिया पत्ता बारीक कटा हुआ
- एक चम्मच लहसुन का पेस्ट
- एक चम्मच अदरक का पेस्ट
- छः चम्मच सरसों तेल
- एक चम्मच धनिया पाउडर
- आधा चम्मच हल्दी पाउडर
- आधा चम्मच लाल मिर्च पाउडर
- चुटकी भर जीरा पाउडर
- चुटकी भर काली मिर्च पाउडर
- आधा चम्मच कश्मीरी लाल मिर्च पाउडर
- आधा चम्मच गरम मसाला पाउडर
- नमक स्वादानुसार
- आधा चम्मच जीरा
- एक चम्मच कसूरी मेथी
- दो तेजपत्ते
- 3 कप पानी

विधि

बनाने की विधि : दो बड़े आकार के प्याज को लम्बे एवं मोटे आकार में काट लें. किसी बर्तन में ६ चम्मच बेसन डालें. बेसन में हल्दी पाउडर, लाल मिर्च पाउडर, बारीक कटी हुयी हरी मिर्च, बारीक़ कटा हुआ अदरक मिलाएं. मिश्रण में थोडा सा पानी डालें और हल्के हाथों से गुंध लें ताकि सारे मिश्रण अच्छी तरह से आपस में मिल जाएं. ध्यान रहे की मिश्रण में पानी उतना ही डालें ताकि मिश्रण का घोल न बने, बस बेसन, प्याज और मसाले आपस में चिपक जाएं. अगर मिश्रण पाउडर की तरह दिख रहा हो, तो अंदाज से थोडा और पानी डालकर गुंध सकते हैं. नमक अभी न डालें, ग्रेवी में जब पकौड़े डालने हों, तभी नमक डालें अन्यथा मिश्रण घोल के रूप में तब्दील होने लगेगा.

सब्जी की ग्रेवी के लिए : कढ़ाई को मध्यम आंच पर गर्म करें. छः चम्मच सरसों तेल डालें. तेल जब गरम हो जाए तो आधा चम्मच जीरा और दो तेजपत्ते डाल दें. जब जीरा तड़कने लगे तो उसमें उसमें बारीक कटे हुए प्याज को डालें. जब प्याज सुनहरे रंग का हो जाए तो उसमें बारीक कटे हुए टमाटर डाले. स्वादानुसार नमक डालें ताकि टमाटर अच्छी तरह से गलने सके. प्याज और टमाटर को थोड़ी देर धीमी आंच पर भुनें. जब टमाटर गलने लगे तो उसमें लहसुन और अदरक का पेस्ट डालें. धनिया पाउडर, लाल मिर्च पाउडर, कश्मीरी मिर्च पाउडर, जीरा पाउडर, काली मिर्च पाउडर को डालें और धीमी आंच पर भुनें. जब टमाटर, प्याज और मसालों से तेल अलग होने लगे तो ३ कप पानी डालें. ढक्कन लगा कर ग्रेवी को खौलने दें. ध्यान रहे की ग्रेवी इतनी अधिक हो की जब आप पकौड़े डालें तो वो ग्रेवी में अच्छी तरह से डूब जाएं. चूँकि पकौड़े के मिश्रण में बेसन होगा, वो ग्रेवी को तेजी से सोखना शुरू कर देगा. इसलिए उतनी मात्रा में पानी डालकर ग्रेवी को खौलाएं. कसूरी मेथी को हथेली पर रगड़ें और ग्रेवी में मिलाएं. गरम मसाला भी अभी ही डाल दें.

जब ग्रेवी खौलने लगे तब आंच को तेज कर दें. पकौड़े के मिश्रण में नमक मिलाएं और मध्यम आकार के पकौड़े तेजी से बनाते जाएं और खौलते हुए ग्रेवी में डालते जाएं, जैसे आप तेल में पकौड़े तलते हैं. ध्यान रहे कि पकौड़े टूटे नहीं. जब सारे पकौड़े डल जाएं तो गरम मसाला डालें. जब ग्रेवी खौलने लगें तो आंच को मध्यम कर दें और करीब दस मिनट तक ढक कर पकाएं. अगर ग्रेवी ज्यादा गाढ़ी हो तो अलग से पानी गर्म कर के ग्रेवी में डालें और थोड़ी देर पकने दें.

सर्व करने से पहले बारीक कटे हुए धनिया पत्ते से सजाएं. आप इस व्यंजन को रोटी या चावल के साथ खा सकते हैं.

Life @ Satya

SATYA MicroCapital Ltd.

सर्वे भवन्तु सुखिनः

CONTACT US

Address : 519, 5th Floor, DLF Prime Towers, Okhla Industrial Area, Phase-1, Delhi- 110020, INDIA

Mail : info@satyamicrocapital.com

Web : www.satyamicrocapital.com

Phone : (+91-11) 49724000

Toll Free Number : 1800-102-5644